IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म की ओर

डॉ. सुभाष चन्द्र

सहायक आचार्य इतिहास

राजकीय कन्या महाविद्यालय

गुड़ा, नीमकाथाना, राजस्थान, भारत

शोध सारांश

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही प्राचीन भारतीय धार्मिक परंपराएँ हैं, जिनकी जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन दोनों धर्मों के बीच संबंधों, प्रभावों और भिन्नताओं की जांच करना है, ताकि यह समझा जा सके कि कैसे एक धर्म ने दूसरे धर्म को प्रभावित किया और कैसे बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म की मौजूदा परंपराओं और विचारों को चुनौती दी। इस शोध पत्र का उद्देश्य हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच संबंधों, प्रभावों, और भिन्नताओं की विस्तृत जांच करना है। यह अध्ययन यह दर्शाएगा कि कैसे बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म की कुछ परंपराओं को चुनौती दी और किस प्रकार दोनों धर्म एक–दूसरे पर प्रभाव डालते रहे।

मूल शब्द :– हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, धारणाएँ, धार्मिक, भारतीय।

हिन्दू धर्म, जिसे वेदिक धर्म भी कहा जाता है, प्राचीन भारत की एक प्रमुख धार्मिक परंपरा है। इसके विपरीत, बौद्ध धर्म की स्थापना 6ठी सदी ईसा पूर्व में सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) द्वारा की गई थी। इस प्रस्तावना में, हम हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के उद्भव और उनके बीच पारंपरिक और दार्शनिक संबंधों का परिचय देंगे। हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही भारतीय उपमहाद्वीप के धार्मिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हिन्दू धर्म का इतिहास वेदों और उपनिषदों से शुरू होता है, जबकि बौद्ध धर्म की स्थापना 6ठी सदी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध ने की। इस प्रस्तावना में हम इन दोनों धर्मों की उत्पत्ति और उनके विकास की शुरुआत पर ध्यान देंगे।

- हिन्दू धर्म की आधारभूत धारणाएँ

हिन्दू धर्म की आधारभूत धारणाओं में वेद, उपनिषद, भागवद गीता और पुराण शामिल हैं। हिन्दू धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) प्राप्त करना है, जो पुनर्जन्म (संसार) के चक्र से मुक्ति का प्रतीक है। हिन्दू धर्म में कर्म, पुनर्जन्म, और आत्मा (आत्मा) की अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं।

- बौद्ध धर्म की आधारभूत धारणाएँ

बौद्ध धर्म की स्थापना के बाद, सिद्धार्थ गौतम ने जीवन के दुःख (दुःख), उसके कारण (समुदय), और उसका निवारण (निर्वाण) की अवधारणाओं पर आधारित धर्म का प्रचार किया। बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग की प्रमुखता है। बौद्ध धर्म में आत्मा की अवधारणा का अभाव है और निर्वाण की प्राप्ति का उद्देश्य है।

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच संबंध

➢ **सांस्कृतिक और दार्शनिक प्रभाव**

हिन्दू धर्म के तत्व जैसे कि कर्म और पुनर्जन्म बौद्ध धर्म में भी मौजूद हैं, हालांकि बौद्ध धर्म ने इन अवधारणाओं को नए दृष्टिकोण से देखा। बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म के जाति व्यवस्था और वेदिक अनुष्ठानों की आलोचना की और सरलता और व्यक्तिगत ध्यान पर जोर दिया।

➢ सामाजिक प्रभाव

बौद्ध धर्म ने हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था की आलोचना की और सभी व्यक्तियों को समान मानते हुए एक समान समाज की परिकल्पना की। इसने धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से क्रांतिकारी बदलाव लाए। बौद्ध धर्म ने जाति व्यवस्था की आलोचना की और एक समान समाज की परिकल्पना की। इसके माध्यम से, बौद्ध धर्म ने हिन्दू समाज की संरचनात्मक समस्याओं को उजागर किया और एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म में मुख्य भिन्नताएँ

- आत्मा की अवधारणा

हिन्दू धर्म में आत्मा (आत्मा) की अवधारणा महत्वपूर्ण है, जबकि बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करता है और अअनंत आत्मा के बिना निर्वाण की प्राप्ति पर ध्यान केंद्रित करता है। हिन्दू धर्म में आत्मा (आत्मा) की अवधारणा महत्वपूर्ण है, जबकि बौद्ध धर्म इसे अस्वीकार करता है और निर्वाण की प्राप्ति का उद्देश्य है।

- मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग

हिन्दू धर्म में मोक्ष की प्राप्ति के लिए ध्यान, योग, और भक्ति के माध्यम से व्यक्तिगत प्रयास पर जोर दिया जाता है, जबकि बौद्ध धर्म अष्टांगिक मार्ग और ध्यान के माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति पर केंद्रित है। हिन्दू धर्म में मोक्ष की प्राप्ति के लिए ध्यान, योग, और भक्ति पर जोर दिया जाता है, जबकि बौद्ध धर्म अष्टांगिक मार्ग और ध्यान के माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति पर केंद्रित है।

- हिन्दू धर्म की मूल बातें

वेदिक परंपराएँ हिन्दू धर्म की उत्पत्ति वेदों से होती है, जो प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं। वेदों में कर्म, धर्म, और मोक्ष की अवधारणाएँ प्रमुख हैं।

➢ उपनिषद और भागवद गीता : उपनिषदों ने वेदों के कर्मकांड की आलोचना करते हुए ध्यान और योग के माध्यम से आत्मा की खोज को प्राथमिकता दी। भागवद गीता ने धर्म, कर्म, और भक्ति की अवधारणाओं को विस्तार से प्रस्तुत कियझं
➢ पुराण और महाकाव्य : पुराण और महाकाव्य जैसे महाभारत और रामायण हिन्दू धर्म की सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का हिस्सा हैं।
➢ सिद्धार्थ गौतम का जीवन : बौद्ध धर्म की स्थापना सिद्धार्थ गौतम ने की, जिन्होंने जीवन के दुःख और उसके निवारण की खोज की। उन्होंने तपस्विता और ध्यान के माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति की।
➢ चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग : बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग हैं, जो दुःख के कारण और उसका निवारण प्रस्तुत करते हैं।
➢ निर्वाण और कर्म : बौद्ध धर्म में आत्मा की अवधारणा का अभाव है और निर्वाण की प्राप्ति पर जोर दिया जाता है।

धार्मिक और दार्शनिक प्रभाव

बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म की कुछ अवधारणाओं को चुनौती दी, जैसे कि जाति व्यवस्था और कर्मकांड की जटिलता। बौद्ध धर्म ने सरलता और व्यक्तिगत ध्यान पर जोर दिया, और यह भारतीय दार्शनिक परंपरा पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म की ओर

बाबा साहेब ने श्रोताओ को बताया कि हिन्दूओं के प्रसिद्ध तीर्थ पढ़रपुर में 'विठोबा' का मंन्दिर वस्तुत बुद्ध विहार है। उन्होंने आषा व्यक्त की कि वह इस सर्न्दभ मे एक शोध ग्रन्थ लिखेंगे और उसे भारतीय इतिहास संषोधन में पूना के समक्ष पढेंगे। अम्बेडकर ने शोध ग्रन्थ मार्च 1955 में 'योनावला' लिखना भी शुरू कर दिया था, किन्तु थोड़ा ही लिख पाये थे कि अचानक उनका देहावसान हो गया। डॉ. अम्बेडकर बैंग्लोर (कर्नाटक) में बुद्ध प्रचारकों को षिक्षा देने के लिये ''बौद्ध अनुसंधान केन्द्र'' खोलने के लिये मैसूर के महाराजा से जून 1954 में 5 एकड़ जमीन ली तथा इस बाबत जापान के बौद्ध नेता डॉ. केलिन्स बावली से बात–चीत की। मार्च 1955 के बाद डॉ. साहेब का स्वास्थ्य गिरता गया तथा 29 मार्च 1955 में उन्हे राज्यसभा मे उपस्थिति अवकाष लेना पड़ा। ऐसे लोगो से संगति रखने का क्या औचित्य,जो सहयोगियों को पषुओं से भी निकृष्ट समझते हैं। ऐसे लोग पाखण्डी है, जो व्यक्ति कीड़े –मकोड़े के बिलों पर तो मिष्ठान डालते हैं, परन्तु अपने सहयोगियों को पानी पीने से मना करके भुखा– प्यासा मार देते हैं। उनका साथ नहीं रखना चाहिए।

27 अगस्त 1955 में डॉ. अम्बेडकर के सभापतित्व में शैड्यूल्ड कास्ट्स फैडरेषन की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। जिसमें निम्नांकित प्रस्ताव पारित किये गये।

1. केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान सभाओं तथा स्थानीय निकाय संस्थानों में आरक्षित सीटें खत्म करके सरकारी नौकरियों में इन जातियों के स्थान पूरी तौर पर भरे जावें।

2. गोवा को भारत मे शामिल किया जावें।

3. शैड्यूल्ड कास्ट् फैडरेषन का नया संविधान बनाकर राजाभाउ को नया महामंत्री, राजाभोज के स्थान पर बनाया गया।

मई 1956 मे डॉ. अम्बेडकर ने ब्रिटिष ब्रॉड कास्टिंग कॉरपोरेषन लंदन को अपने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि ''मैं बुद्ध धर्म को पंसद करता हूँ और यह वर्तमान परिस्थितियों के लिए क्यों कल्याणकारी है। उन्होंने बताया कि ''मैं बुद्ध धर्म को इसलिए प्राथमिकता देता हूँ क्योंकि इसमें तीन ऐसे सिद्धान्त एक ही जगह पर मिलते है; जो अन्य धर्मो में नही मिलते, बुद्ध धर्म जड़ता की अपेक्षा सूझ– बूझ की षिक्षा देता है, वह करूणा (प्रेम व भ्रातृत्व) और समता सिखाता है। यह वे वस्तुऐं है जो अच्छे व प्रसन्न जीवन के लिए मनुष्य के लिए अनिवार्य है, न ईष्वर, न आत्मा समाज को बचा सकते हैं। मार्क्सवाद और कम्यूनिज्म ने समस्त विष्व की धार्मिक प्रणालियों को झखझोर दिया है। बुद्ध धर्म ही मार्क्स और कम्यूनिज्म का उचित द्वार हो सकता है, जो बुद्ध देष कम्यूनिस्ट हो गये हैं वे नहीं समझते कि कम्यूनिज्म क्या है, रूस के ढंग का कम्यूनिज्म शक्ति क्रांति लाता है, दक्षिण पूर्वी एषिया को रूसी जाल मे फसने से सावधान रहना चाहिए। उनके लिए आवष्यक यह है कि वे बुद्ध की षिक्षाओं को राजनीतिक रूप दे, निर्धनता प्रत्येक स्थान पर है और सर्वदा रहेगी भी, रूस मे भी निर्धनता है परन्तु निर्धनता को मानवीय स्वतंत्रता को बलिदान करने के लिए नहीं बहाया जा सकता। जब एक बार यह महसूस हो गया कि बुद्ध–धर्म एक सामाजिक सिद्धान्त है तो फिर इसे पुर्नजीवित करने का काम एक स्थायी घटना के रूप में शुरू हो जावेगा।

बाबा साहेब ने ''वायस ऑफ अमेरिका से भारत मे लोकतंत्र के भविष्य के सबंध मे एक भाषण प्रसारित करते हुए बताया कि लोकत्ंत्र मिल– जुल कर रहने का एक ढंग है; लोकतंत्र की जडे सामाजिक संम्बन्धो मे ढूंढी जाती है अर्थात् समाज के पृथक पृथक लोगो में किस प्रकार के भ्रातृत्व पूर्ण लोगो मे किस प्रकार के भ्रातृत्व पूर्ण सम्बन्ध हो; भारतीय समाज जात– पात में जो अपने आप मे सब कुछ है; पर आधारित है। निर्वाचन मे प्रत्याषी जात– पात को समझकर खड़े किये जाते है, उधोग में भी जात– पात का बोल– बाला है, ऊँचे पद बड़े उधोगपतियों के सम्बंन्धियों या जात बराबरी के लोगों को ही दिये जाते हैं, वाणिज्य व्यापार भी एक ही जात का अधिकार बनकर रह गया है, दान– पुण्य भी साम्प्रदायिक है, जात– पात घृणा का अवरोही क्रम है। जात और वर्ग में केवल इतना ही अन्तर है कि वर्ग प्रणाली में जात–पात की भांति पूर्ण पृथकत्व नहीं है।

यदि आप भारतीय समाज के निम्न वर्गों को जो जात– पात का सर्वनाष करने में रूचि रखते हैं, षिक्षा दें तो जात पात का चिन्ह तक मिट जावेगा। इस समय भारत और अमेरिकी संस्थाओं की और से विद्या प्रसार के लिए सहायता दी जाती है, उससे जात–पात को बल मिला है, जो लोग जात–पात का सर्वनाष करना चाहते है, यदि उन्हें षिक्षा दी जाये तो न केवल भारत में लोकत्ंत्र विकसित होगा अपितु वह सुरक्षित हाथों में भी चला जावेगा''। ''बुद्ध और उनका धम्म'' नामक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि तैयार हो गई थी मगर धनाभाव के कारण प्रकाषित नहीं हो पा रही थी। मई 1956 के षुरू

में ही डॉ. अम्बेडकर बम्बई आ गये तथा 24 मई को ''नरे पार्क'' मे बुद्ध जयन्ती के शुभ अवसर पर घोषणा की कि मैं अक्टुबर 1956 में बुद्ध धर्म अंगीकार करूंगा। उनके मतानुसार किसी भी धर्म के पतन के तीन प्रमुख कारण होते हैं– अपने सिद्धान्तों पर आचरण नही करना, योग्य व प्रभावषाली प्रचारकों की कमी व शीघ्र समझे जाने योग्य सिद्धान्तों की कमी ही है। मैं शीघ्र ही एक शानदार बुद्ध बिहार का निर्माण भी करूंगा। यह बम्बई में उनकी अन्तिम घोषणा थी।

बाबा साहेब 'बाईबल'के प्रचण्ड विद्वान थे। उन्होंने अपनी तुलना मूसा के साथ की। मूसा ने इजरालियों को बेगार और दासता से मुक्ति दिलवाई। मूसा को एक राजकुमार ने पाला व षिक्षा दिलवाई। मूसा ने''ट्रम्पल ऑफ ऑन'' एक प्रसिद्व विष्वविधालय में षिक्षा प्राप्त की। डॉ. अम्बेडकर की भी बडौदा महाराज सयाजी राव गायकवाड़ ने भरपूर मदद की तथा संसार के तीन प्रसिद्ध विष्वविधालयों में षिक्षा प्राप्त की थी। बाबा साहेब भी मूसा की तरह दृढ,संघर्षषील व संयमी थे। दोनों ने अपने लोगों की दासता की जंजीरे तोड़ी एंव धर्म व कानून का प्रसार किया व अपनी जनता का समृद्ध भूमि व एवं स्वछंद वातावरण मे पदार्पण करवाया। जबकि मूसा 80 वर्ष की आयु में अपने लोगों की दासता की बेड़ियॉ काटकर ईरान से निकलकर फिलस्तीन की स्वतंत्र भूमि पर ले गया था, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने 65 वर्ष की आयु में ही अपने राष्ट्र जाति को कानून प्रदान कर उनको सूचीबद्ध विस्तार एवं व्याख्या की। डॉ. अम्बेडकर जून से अक्टुवर 1956 तक अपने दिल्ली के अलीपुर रोड़ निवास पर ही रहे। उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा था। डॉ. साहेब इस बात से बहुत चिंतित थे कि उनकी पुस्तकों को कौन पूरा करेगा, मेरे लोगो को सहारा कौन देगा ? ऐसा देष जिसके लोग बहुत पक्षपाती हों इस देष मे जन्म लेना पाप है,फिर भी मैंने बहुत कुछ किया और अन्तिम श्वांस तक मैं लोकसेवा करता रहुंगा। आदि–आदि सोचकर व्याकुल हो उठते थे। एक रोज उन्होने नानकचन्द रत्तू (उनका अभिन्न अंग) से कहा कि ''मेरी जनता को यह बताना कि जो कुछ भी मैं उनके लिए कर पाया, वह मैं अपने जीवन में भांति– भाति की कठिनाईयों, बांधाओ और विप्पत्तियो को सहन करके किया है और मुझे अपने विरोधियों के साथ संघर्ष करने पड़े हैं बडी कठिनाई के साथ यह काफिला, जहाँ यह आज है. लेकर आ सका हूँ चाहे कुछ भी हों. कठिनाईयों के बावजूद यह काफिला आगे ही आगे बढता ही रहना चाहिए, यदि मेरे अनुयायी इस काफिले को आगे न ले जा सके तो उन्हे इस काफिले को किसी रूप मे पीछे भी नहीं जाने देना चाहिए, मेरा अपने लोगों को यही संदेष है''। यह हम सबको शपथ लेकर अपना जीवनयापन करना चाहिए।

बाबा साहेब ने 14 अक्टुबर 1956 को बुद्ध धर्म में दीक्षा लेने की घोषणानुसार वे नागपुर शहर में ही दीक्षा लेना चाहते थे। कारण यह था कि नागपुर बोद्ध नागाओं का पुरातन काल का एक एतिहासिक शहर था। इसी ऐतिहासिक शहर को बुद्ध धम्म से जोड़कर ही बुद्ध धर्म की बिगुल भारत में बजाना चाहते थे। इस बाबत् विचार–विमर्ष करने के लिए भारतीय जन समिति के सचिव श्री डब्ल्यु. एम.गोडबोले को दिल्ली बुलवाया तथा उनसे समाहरोह की तैयारीयों की जानकारी ली तथा इस समिति द्वारा दलित वर्गो के लोगों से इष्तिहारों के माध्यम से अधिक से अधिक संख्या में सफेद वस्त्र धारण कर बुद्ध धर्म की दीक्षा के लिए नागपुर शहर पहुँचने की पुरजोर अपील की गई।

बाबा साहेब ने 23 सितम्बर 1956 को एक प्रेस वक्तव्य जारी किया। जिसमें उनके द्वारा घोषणा की गई की वे 14 अक्टुबर 1956 को प्रातः 9 से 11 बजे के बीच नागपुर शहर में बुद्ध धम्म की दीक्षा लेंगे। उन्होने वोवृद्ध बौद्ध भिक्षु चन्द्रमणि जो उत्तरप्रदेष के गोरखपुर जिले मे कुषीनारा में रहते थे। से भी मिलकर बोद्ध धर्म की दीक्षा देने के लिए सहमति प्रदान कर ली तथा महाबोद्धी सोसायटी ऑफ कलकत्ता के महामंत्री श्री देवप्रिय बाली सिन्हा को 14 अक्टुबर प्रातः को नागपुर पहुँचने का निवेदन किया। डॉ. अम्बेडकर अपनी पत्नी सविता कबीर एवं नानकचन्द रत्तू के साथ 11 अक्टुबर को दोपहर जहाज द्वारा नागपुर पंहुचे। उनके ठहरने का इंतजाम नागपुर के 'शाम' होटल में किया गया। लाखों लोगों ने अपने मुक्तिदाता के चरण स्पर्ष कर अपने को धन्य महसूस किया।

श्रद्धानन्द पेड के पास 14 एकड़ में एक विषाल पण्डान सजाया गया जो महान् अैर प्रसिद्ध बौद्व विद्वान नार्गाजुन का पवित्र स्थान रहा था। वह 14 अक्टुबर को एक महान् ऐतिहासिक,सांस्कृतिक तथा धार्मिक केन्द्र बन गया। पाण्डाल के उत्तरी छोर में सांची स्तूप जैसा शानदार द्वार बनाया गया. तथा जिसके द्वार दोनों तरफ खुलते थे। महिलाओं एंव पुरूषों के बैठने की अलग– अलग व्यवस्था की गई। बोद्ध ध्वजों से पाण्डाल सजाया गया । पाण्डाल का आकर्षण बहुत ही लुभावना था। 13 अक्टुबर की 'शाम' को बाबा साहेब ने प्रेस कॉन्फ्रेन्स कर पत्रकारों को बताया कि उनका बुद्ध धर्म वैसा ही होगा जैसा बुद्ध ने स्वंय प्रचार किया जो सिद्धान्त उन्होंने स्वंय बताये। हम हीनयान या महायान के पचड़े मे नही पड़ेंगे। अपितु बुद्धयान यानि बुद्ध की और से दिये धम्म पर ही चलेंगे।

सवांददाताओं द्वारा यह पूछे जाने पर कि आप बुद्ध धम्प क्यों अपना रहे हो, का उतर देते हुये बताया कि ''वह बुद्ध धम्म को इसलिए स्वीकार कर रहे हैं कि यह भारतीय सभ्यता का ही अंग है। मैंने इस बात का ध्यान रखा है कि मेरे धर्म

परिवर्तन से भारतीय भूमि के इतिहास और सांस्कृतिक परम्पराओं को कोई हानि नही पहुंचे। बाबा साहेब ने यह भी घोषणा की कि वे अपने अनुयायियों की षिक्षा के लिए देष में बुद्ध धर्म का प्रचार करेंगे। और उन्हें सही अर्थो मे बुद्ध धर्म जीवन बिताने की प्रेरणा देंगे। 14 अक्टुबर को बाबा साहेब दैनिक दिनचर्या से निवृत होकर श्वेत सिल्की धोती और श्वेत कोट पहनकर नानकचन्द रत्तू और पत्नी के साथ सुबह साढ़े आठ बजे कार में सवार होकर 'शाम' होटल से रवाना हुए। जैसे ही वे 'शाम' होटल के बहार आये तो लोगों ने सभी प्रबंध अस्त– व्यस्त कर दिये। बडी मुष्किल से उन्हें पाण्डाल तक पंहुचाया गया। जब बाबा साहेब रतू के कंधो पर हाथ रखकर पाण्डाल में पहुचे तो पाण्डाल बाबा साहेब की जय, बुद्ध धम्म की जय, आकाष– पाताल एक करो –बुद्ध धम्म ग्रहण 'करो' के नारों से गुंज रहा था।

निष्कर्ष

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही भारतीय धार्मिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा हैं, और एक–दूसरे को समझने के लिए उनके बीच के संबंधों और भिन्नताओं की जानकारी होना आवश्यक है। बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म की कई परंपराओं और विचारों को चुनौती दी और नई दार्शनिकता प्रस्तुत की, जो आज भी भारतीय समाज और संस्कृति पर प्रभावी है। हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही भारतीय धार्मिक परंपराओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म की कई परंपराओं को चुनौती दी और नई दार्शनिकता प्रस्तुत की। इन दोनों धर्मों के बीच संबंधों और भिन्नताओं की समझ से हमें भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास को बेहतर तरीके से समझने में सहायता मिलती है।

यह शोध पत्र हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच संबंधों, प्रभावों और भिन्नताओं की व्यापक समीक्षा करता है। इसके माध्यम से यह समझने में सहायता मिलेगी कि कैसे ये दोनों धर्म भारतीय धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. सी. ए. डी. ऑफिषियल रिपोर्ट, खण्ड 7, 4 नवम्बर 1948 (डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर, रायटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खण्ड 13)
2. रविवार्ता के अन्तर्गत – 'नवभारत टाइम्स' 22 जनवरी; 1995
3. वी. आर. कृष्णा अययर; 'व्हाई स्लर अम्बेडकर' हिन्दुस्तान टाइम्स, 22 फरवरी 1995
4. सी.ए.डी. ऑफिषियल रिपोर्ट, खण्ड 11, 26 नवम्बर 1949
5. डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर – रायटिंग्स एण्ड स्पीचेज, खण्ड 2 (महाराष्ट्र सरकार प्रकाषन, बॉम्बे 1982 व 1994)
6. बी.आर. अम्बेडकर फेडरेषन वर्सेज फीडम (भीम पत्रिका पब्लिकेषन्स, जालंधर 1977)
7. जवाहर लाल नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इंडिया (मेरिडियन बुक्स, लन्दन 1944)
8. बी.बी. मिश्र, द ब्यूरोकेसी इन इंडिया (ऑक्सफोर्ड बॉम्बे, 1977)
9. एन.डी. पामर, द इंडियन पॉलिटिकल सिस्टम (हॉगटन, बोस्टन 1970)
10. बी.डी. महाजन फिफ्टी यीअर्स ऑफ मॉर्डन इंडिया, (1919–1969) (चांद एण्ड कम्पनी दिल्ली 1970)
11. धनन्जय कीर डॉ. अम्बेडकर– लाइफ एण्ड मिषन (पॉपूलर प्रकाषन बॉम्बे 1962)
12. सोर्स मेटेरियल ऑन डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर एण्ड द मुवमेण्ट ऑफ अण्टचेबिल्स, खण्ड 1, (महाराष्ट्र सरकार प्रकाषन बॉम्बे 1982)
13. धनन्जय कीर, वही पृ. 337–338
14. डी.आर. जाटव, राष्ट्रीय आन्दोलन में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका, (समता साहित्य सदन जयपुर 1989)
15. बी.आर. अम्बेडकर, पाकिस्तान ऑर द पार्टीषन ऑफ इंडिया, (थैकर एण्ड कम्पनी, बॉम्बे 1946)
16. धनन्जय कीर, वही पृ. 340
17. डॉ. अम्बेडकर 'स स्टेटमेण्ट ऑन क्रिप्पस प्रपोजल्स, अप्रेल 1942
18. वी.पी.एस. रघुवंषी, इंडियन नेषनलिस्ट मूवमेण्ट एण्ड थॉट (लक्ष्मी नारायण, आगरा 1959)
19. बोस पटवर्धन, गांधी इन इंडियन पॉलिटिक्स (लल्वानी, बॉम्बे, 1967)
20. इंडियन एनुअल रजिस्टर, खण्ड 2 1946
21. सी.ए.डी. खण्ड 1, नम्बर 1, 13 दिसम्बर 1946–वही 17 दिसम्बर 1946
22. बी.आर. अम्बेडकर, स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज 1947
23. जी. ऑस्टिन, द इंडियन कान्सटीट्यूषन, (आक्सफोर्ड, बॉम्बे 1976)
24. एल.आर. बाली द्वारा प्रकाषित, डॉ. भीमराव अम्बेडकर – जीवन एवं मिषन
25. बी.आर. सांपला 20 कैम्ब्रिज रोड अल्डरषॉट हंट्स, इंग्लैण्ड द्वारा लिखित प्रकाषित पुस्तके इत्यादि।